शिव ताण्डव स्तोत्रम

जटा अटवी गलज् जल प्रवाह पावित स्थले
गले अवलम्बय लम्बिताम् भुजंग तुंग मालिकाम्।
डमड् डमड् डमड् डमन् निनाद व डमर् वयं
चकार चण्ड ताण्डवम् तनोतु नः शिवः शिवम्।। 1

जटा कटाह सम्भ्रम भ्रम निलिम्प निर्झरी
विलोल वीचि वल्लरी विराजमान मूर्धनि।
धगद् धगद् धगज् ज्वल ललाट पट्ट पावके
किशोर चन्द्र शेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम।। 2

धरा धरेन्द्र नन्दिनी विलास बन्धु बन्धुर
स्फुरद् दिगन्त सन्तति प्रमोद मान मानसे।
कृपा कटाक्ष धोरणी निरूद्ध दुर्धरा पदि
क्वचित् दिगम्बरे मनोविनोद मेतु वस्तुनि।। 3

जटा भुजंग पिंगल स्फुरत फणा मणि प्रभा
कदम्ब कुंकुम द्रव प्रलिप्त दिग् वधू मुखे।
मदान्ध सिन्धुर स्फूरत्व गुः तरी यमे दुरे
मनोविनोद मद् भुतं बिभर्तु भूत भर्तरि।। 4

सहस्र लोचन प्रभृत्य शेष लेख शेखर
प्रसून धूलि धोरणी विधू सरांघ्रि पीठ भूः।
भुजंग राज मालया निबद्ध जाट जूटक :
श्रियै चिराय जायताम् चकोर बन्धु शेखर :।। 5

ललाट चत्वर ज्वल धनन्जय स्फुलिंग भा
निपीत पंच सायकं नमन् निलिम्प नायकम्।
सुधा मयूख लेखया विराजमान शेखरम्
महा कपालि सम्पदे शिरो जटाल मस्तु नः।। 6

कराल भाल पट्टिका धगद् धगद् धगज् ज्वल
धनंजय आहुती कृत प्रचण्ड पंच सायके।
धरा, धरेन्द्र नन्दिनी कुचाग्र चित्र पत्रक
प्रकल्प नैक शिल्पिनि त्रिलोचने रतिर् मम।। 7

नवीन मेघ मण्डली निरूद्ध दुर्धर स्फुरत्
कुहु निशी थिनी तमः प्रबन्ध बद्ध कन्धरः।
निलिम्प निर्झरी धरस् तनोतु कृत्ति सिन्धुरः
कला निधान बन्धुरः श्रियं जगत् धुरन्धरः।। 8

प्रफुल्ल नील पंकज प्रपंच कालिम प्रभा
वलम्बि कण्ठ कन्दली रूचि प्रबद्ध कन्धरम्।
स्मरच् छिदम् पुरच् छिदम् भवच् छिदम् मखच् छिदम्
गजच् छिदान्ध कच् छिदम् तमन्त कच् छिदम् भजे।। 9

अखर्व सर्व मंगला कला कदम्ब मंजरी
रस प्रवाह माधुरी विजृम्भणा मधु व्रतम्।
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं
गजान्त कान्ध कान्तकं तमन्त कान्तकं भजे।। 10

जयत् वद भ्रवि भ्रम भ्रमद भुजंग मश्वसत्
वि निर्गमत् क्रम स्फुरत् कराल भाल हव्य वाट्।
धिमिद् धिमिद् धिमि ध्वनन् मृदंग तुंग मंगल
ध्वनि क्रम प्रवर्तित प्रचण्ड ताण्डवः शिवः।। 11

दृषद् विचित्र तल्प योर् भुजंग मौक्तिक स्रजोर
गरिष्ठ रत्न लोष्ठ योः सुहृद् विपक्ष पक्षयो :।
तृण अरविन्द चक्षुषोः प्रजा मही महेन्द्रयोः
सम प्रवृत्तिकः कदा सदा शिवं भजे अहं।। 12

कदा निलिम्प निर्झरी निकुंज कोटरे वसन्
विमुक्त दुर्मतिः सदा शिरः स्थम् अंजलिम् वहन्।
विलोल लोल लोचनो ललाम भाल लग्नकः
शिवेति मंत्र मुच्चरन् कदा सुखी भवाम् अहम्।। 13

इमं हि नित्य मेव मुक्त मुत्त मोत्तमं स्तवं
पठन स्मरन् ब्रुवन् नरो विशुद्धि मेति सन्ततम्।
हरे गुरौ सुभक्ति माशु याति नान्यथा गतिं
विमोहनं हि देहिनां सु शंकरस्य चिन्तनम्।। 14

पूजा अवसान समये दश वक्त्र गीतं
यः शम्भु पूजन परं पठति प्रदोषे।
तस्य स्थिरां रथ गजेन्द्र तुरंग युक्तां
लक्ष्मीं सदैव सु मुखी प्र ददाति शम्भुः।। 15